eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

शिक्षक के मूल्य और शिक्षण प्रभावशीलता : भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में एक समीक्षा

चन्द्र शेखर यादव[1], डॉ. शुभ राम[2]
[1]शोधार्थी (शिक्षा शास्त्र – बी.एड), जे0जे0टी0यू0 झुन्झुनू, राजस्थान
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, जे0जे0टी0यू0 झुन्झुनू, राजस्थान

Received: 20 August 2025 Accepted & Reviewed: 25 August 2025, Published: 31 August 2025

Abstract

यह शोधपत्र भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई. के. एस.) के ढांचे में शिक्षक मूल्यों और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच संबंधों की समीक्षा करता है। जहाँ आधुनिक शिक्षा मापनीय दक्षताओं और शैक्षणिक तकनीकों पर जोर देती है, वहीं आईकेएस सत्य, करुणा, आत्म–अनुशासन, विविधता के प्रति सम्मान और शिक्षार्थियों के समग्र विकास जैसे मूल्यों पर जोर देता है। यह समीक्षा शिक्षक मूल्यों पर मौजूदा शोध का संश्लेषण करती है, आईकेएस सिद्धांतों के साथ संबंध स्थापित करती है, और समकालीन भारतीय विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षण प्रभावशीलता बढ़ाने के निहितार्थों पर चर्चा करती है।

मुख्य शब्द – भारतीय ज्ञान प्रणाली , शिक्षक मूल्य और शिक्षक प्रभावशीलता , उच्च शिक्षा संस्थान।

Introduction

एक शिक्षक की प्रभावशीलता को लंबे समय से छात्रों की उपलब्धि, समग्र विकास और शिक्षा की समग्र गुणवत्ता को आकार देने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक माना जाता रहा है। यद्यपि शिक्षक प्रभावशीलता की अवधारणा अक्सर कक्षा प्रबंधन, विषय प्रवीणता, शैक्षणिक रणनीतियों और मूल्यांकन प्रथाओं के संदर्भ में की जाती रही है, विद्वान तेजी से स्वीकार कर रहे हैं कि शिक्षक के मूल्य शिक्षण प्रभावशीलता का एक केंद्रीय आयाम हैं (बेजार्ड, मीजर, और वेरलूप, 2004; डार्लिंग–हैमंड, 2017)। मूल्य शिक्षकों के नैतिक विकल्पों, व्यावसायिक नैतिकता और छात्रों के साथ संबंधपरक दृष्टिकोण का मार्गदर्शन करते हैं। भारतीय परंपरा में, शिक्षक (गुरु या आचार्य) की भूमिका केवल ज्ञान संचारण से आगे बढ़कर सद्गुण, ज्ञान और जीवन कौशल के विकास तक फैली हुई है, जिससे मूल्यों को शिक्षण के मूल में समाहित किया जाता है। दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपराओं में निहित भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) व्यक्तिगत मूल्यों को शैक्षिक अभ्यास के साथ संरेखित करने पर जोर देती है, शिक्षा को एक लेन–देन की प्रक्रिया के बजाय एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करती है (शर्मा, 2019)।

आधुनिक संदर्भों में, शिक्षण प्रभावशीलता को अक्सर सीखने के परिणामों, परीक्षा प्रदर्शन और कक्षा में सहभागिता के आधार पर मापा जाता है। हालाँकि, भारतीय परिप्रेक्ष्य में, प्रभावशीलता व्यापक है, जिसमें चरित्र निर्माण, नैतिक जागरूकता और शिक्षार्थियों में आत्म–साक्षात्कार का विकास शामिल है (पाठक, 2021)। यह शोधपत्र शिक्षक के मूल्यों और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच संबंधों पर साहित्य की एक व्यवस्थित समीक्षा प्रस्तुत करता है, जिसे भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। यह इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे भारतीय दार्शनिक परंपराएँ, जैसे वेद, उपनिषद, बौद्ध शिक्षाएँ और गुरुकुल प्रणाली, शिक्षण प्रभावशीलता को आकार देने में मूल्यों की भूमिका के बारे में अद्वितीय अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। यह शिक्षक मूल्यों और शैक्षिक परिणामों पर अनुभवजन्य अध्ययनों की भी जाँच करता है, और समकालीन शोध और पारंपरिक दृष्टिकोणों का एक संश्लेशण प्रस्तुत करता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

शिक्षक के मूल्य और शिक्षण प्रभावशीलता का अर्थ– मूल्यों को व्यापक रूप से स्थायी विश्वासों या सिद्धांतों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो मानव व्यवहार और निर्णय लेने का मार्गदर्शन करते हैं (श्वार्ट्ज, 1992)। शिक्षकों के लिए, मूल्य उनके पाठ्यक्रम तैयार करने, छात्रों के साथ बातचीत करने, सीखने का आकलन करने और कक्षा की चुनौतियों से निपटने के तरीके को प्रभावित करते हैं (कैंपबेल, 2003)। शिक्षक के मूल्य बहुआयामी होते हैं, जिनमें नैतिक मूल्य (सच्चाई, निष्पक्षता, करुणा), सांस्कृतिक मूल्य (परंपराओं, विविधता, विरासत के प्रति सम्मान), व्यावसायिक मूल्य (ईमानदारी, जिम्मेदारी, जवाबदेही) और व्यक्तिगत मूल्य (आत्म–अनुशासन, सहानुभूति, विनम्रता) शामिल हैं। दूसरी ओर, शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावी शिक्षण पद्धति, प्रेरणा, कक्षा में सहभागिता और छात्र कल्याण के माध्यम से छात्रों में वांछित शिक्षण परिणाम लाने की शिक्षकों की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है (स्ट्रॉन्ग, 2018)। हालाँकि शैक्षणिक कौशल महत्वपूर्ण बने हुए हैं, कई अध्ययनों से पता चलता है कि शिक्षक के मूल्य विश्वास, सम्मान और सकारात्मक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देकर प्रभावशीलता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाते हैं (रशीद और कैसर, 2017)।

शिक्षण प्रभावशीलता की भारतीय अवधारणा प्रदर्शन मानकों से कहीं आगे जाती है। प्राचीन ग्रंथ शिक्षक को एक आदर्श के रूप में स्थापित करते हैं जिसके मूल्य छात्रों के चरित्र निर्माण को सीधे प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, भगवद् गीता में, कृष्ण इस बात पर बल देते हैं कि नेता और शिक्षक अपने आचरण के माध्यम से समाज को आकार देते हैं, और घोषणा करते हैं, जो भी सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति करता है, दूसरे उसका अनुसरण करते हैं" (गीता 3:21)। यह इस विचार पर प्रकाश डालता है कि मूल्य अमूर्त आदर्श नहीं हैं, बल्कि संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले मूर्त अभ्यास हैं। गुरुकुल प्रणाली में, छात्र शिक्षकों के साथ रहते थे, न केवल शैक्षणिक ज्ञान बल्कि नैतिक आचरण, विनम्रता और संयम भी सीखते थे। ऐसी परंपराएँ इस बात पर जोर देती हैं कि शिक्षण प्रभावशीलता ऐतिहासिक रूप से शिक्षक के मूल्य अभिविन्यास से अविभाज्य रही है (जोशी, 2018)।

भारतीय ज्ञान प्रणाली और शिक्षा में मूल्यों की भूमिका– भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) दार्शनिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक परंपराओं को समाहित करने वाला एक व्यापक ढाँचा है, जिसने सहस्राब्दियों से भारतीय शिक्षा का मार्गदर्शन किया है। आईकेएस का मूल यह विश्वास है कि शिक्षा केवल आजीविका के लिए ही नहीं, बल्कि जीवन के लिए भी है, जिसका उद्देश्य शरीर, मन और आत्मा का समग्र विकास है (बालसुब्रमण्यन, 2019)। इस प्रणाली में, शिक्षक की भूमिका को एक पवित्र दायित्व के रूप में स्थापित किया गया था, जिसमें मूल्य प्रभावी शिक्षण पद्धति की नींव रखते थे।

आईकेएस में निहित कई प्रमुख मूल्य शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं। सत्य का सिद्धांत बौद्धिक ईमानदारी, आलोचनात्मक जाँच और शिक्षण में प्रामाणिकता पर जोर देता है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती थी कि वे सत्य के अनुसार जीवन जिएँ, और इस प्रकार छात्रों के लिए इसका आदर्श प्रस्तुत करें। अहिंसा का मूल्य शारीरिक अहानिकारकता से आगे बढ़कर एक सुरक्षित और पोषणकारी कक्षा वातावरण का निर्माण करना भी था जहाँ कोई भी छात्र अपमानित या हाशिए पर महसूस न करे (राधाकृष्णन, 1998)। इसी प्रकार, सेवा के मूल्य ने शिक्षण को समाज सेवा के रूप में स्थापित किया, जहाँ शिक्षक व्यक्तिगत लाभ के बजाय शिक्षार्थियों के कल्याण के लिए कार्य करते थे। श्रद्धा (विश्वास, सम्मान और भक्ति) सिद्धांत ने शिक्षक और छात्र के बीच पारस्परिक सम्मान के महत्व पर बल दिया, जिससे विश्वास और खुलेपन का रिश्ता विकसित हुआ।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

गुरु–शिष्य परंपरा, जो आईकेएस का एक केंद्रीय शैक्षणिक मॉडल है, शिक्षा में मूल्यों के समावेश को दर्शाती है। इस प्रणाली में, ज्ञान का संचार रटने से नहीं, बल्कि शिक्षक के साथ घनिष्ठ जुड़ाव के माध्यम से होता था, जहाँ छात्र बौद्धिक कौशल के साथ–साथ अनुशासन, विनम्रता और आध्यात्मिकता भी सीखते थे (अल्टबैक, 2005)। उपनिषदों में आत्म–अन्वेषण (स्वाध्याय), आत्म–संयम (दम) और करुणा (दया) को केंद्रीय शैक्षिक मूल्यों के रूप में महत्व दिया गया है। बौद्ध और जैन शैक्षिक परंपराओं ने भी अहिंसा, करुणा, सचेतनता और वैराग्य के मूल्यों को सीखने और सिखाने के लिए आवश्यक बताया है (सोनी, 2015)। इस प्रकार, आईकेएस के अंतर्गत, शिक्षक प्रभावशीलता को मूल्य संचरण और कार्यान्वयन से अविभाज्य माना गया।

शिक्षक मूल्यों और शिक्षण प्रभावशीलता को जोड़ने वाले अध्ययनों की समीक्षा– आधुनिक अनुभवजन्य शोध भी शिक्षक मूल्यों और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच मजबूत संबंध का समर्थन करते हैं। राशिद और कैसर (2017) ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों पर अपने अध्ययन में पाया कि निष्पक्षता, सहानुभूति और सत्यनिष्ठा जैसे मूल्य छात्र संतुष्टि और शैक्षणिक प्रदर्शन से सकारात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। इसी प्रकार, स्ट्रोंग (2018) प्रभावी शिक्षकों की मुख्य योग्यताओं के रूप में देखभाल करने वाले संबंधों और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता की पहचान करते हैं, और इस बात पर जोर देते हैं कि केवल तकनीकी कौशल प्रभावशीलता की गारंटी नहीं दे सकते।

भारतीय संदर्भ में, शर्मा (2019) ने शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की समीक्षा की और प्रभावी शिक्षकों को तैयार करने के लिए मूल्य शिक्षा के एकीकरण को महत्वपूर्ण बताया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ 2005) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) दोनों मानते हैं कि शिक्षण प्रभावशीलता के लिए न केवल ज्ञान और कौशल की आवश्यकता होती है, बल्कि मूल्य–उन्मुखीकरण भी आवश्यक है, जिसमें नैतिकता, विविधता के प्रति सम्मान, पर्यावरणीय चेतना और सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता शामिल है (एनसीईआरटी, 2005; शिक्षा मंत्रालय, 2020)। भारतीय उच्च शिक्षा में शिक्षक मूल्यों पर रानी और कुमार (2020) द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि जिम्मेदारी, सम्मान और छात्र–केंद्रितता के मूल्य शिक्षण प्रभावशीलता के उपायों जैसे छात्र जुड़ाव, निर्देश की स्पष्टता और प्रतिक्रिया की गुणवत्ता के साथ दृढ़ता से सहसंबद्ध हैं।

सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच तुलनात्मक अध्ययन इस बात में संदर्भगत अंतर का सुझाव देते हैं कि मूल्य प्रभावशीलता को कैसे प्रभावित करते हैं। जबकि निजी स्कूल के शिक्षक प्रदर्शन के दबाव के कारण प्रतिस्पर्धात्मकता और नवाचार के मूल्यों पर जोर दे सकते हैं, सरकारी स्कूल के शिक्षक अक्सर हाशिए पर रहने वाली आबादी के साथ अपने जुड़ाव को देखते हुए सामाजिक जिम्मेदारी, समावेशिता और समानता के मूल्यों पर जोर देते हैं (बत्रा, 2009)। हालाँकि, दोनों ही व्यापक भारतीय लोकाचार को दर्शाते हैं कि मूल्य–आधारित शिक्षण अधिक प्रभावी शैक्षिक अभ्यास में योगदान देता है।

अंतर–सांस्कृतिक अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि भारत सहित एशियाई संदर्भों में, छात्र उन शिक्षकों को अधिक प्रभावी मानते हैं जो सम्मान, देखभाल और अनुशासन जैसे मूल्यों का प्रदर्शन करते हैं, बजाय उन शिक्षकों के जो केवल विषयवस्तु प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं (हॉफस्टेड, 2001; पाठक, 2021)। इस प्रकार, मूल्य शिक्षण प्रभावशीलता के एक सार्वभौमिक लेकिन प्रासंगिक रूप से मध्यस्थ निर्धारक के रूप में उभरते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा पर प्रभाव– यह मान्यता कि मूल्य शिक्षण प्रभावशीलता को आकार देते हैं, भारत में शिक्षक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। शिक्षक प्रशिक्षण में आईकेएस को एकीकृत करने से भावी शिक्षकों को आधुनिक शैक्षणिक विधियों और पारंपरिक मूल्य–आधारित दृष्टिकोणों के बीच संतुलन बनाने में मदद मिल सकती है। एनईपी (2020) विशेष रूप से भारतीय लोकाचार, नैतिकता और मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करने का आह्वान करती है, जिसमें समग्र विकास, राष्ट्रीय गौरव और वैश्विक उत्तरदायित्व पर बल दिया गया है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में सत्य, अहिंसा और सेवा जैसे सिद्धांतों को शामिल करने से ऐसे शिक्षकों को विकसित करने में मदद मिल सकती है जो न केवल सक्षम हों, बल्कि दयालु, नैतिक और सामाजिक रूप से जिम्मेदार भी हों (बालासुब्रमण्यन, 2019)।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को चिंतनशील प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो शिक्षकों को अपने व्यक्तिगत मूल्यों और उनके शिक्षण पर उनके प्रभाव का परीक्षण करने में सक्षम बनाती हैं। आत्म–अन्वेषण, ध्यान, कहानी सुनाना और भारतीय शास्त्रीय ग्रंथों से परिचय जैसी रणनीतियाँ आईकेएस सिद्धांतों को एकीकृत करने के सार्थक तरीके प्रदान कर सकती हैं। इसके अलावा, शिक्षक प्रभावशीलता का मूल्यांकन परीक्षा के अंकों से आगे बढ़कर मूल्य–आधारित प्रथाओं, छात्र–शिक्षक संबंधों और समग्र छात्र विकास में योगदान के मूल्यांकन को भी शामिल करना चाहिए।

निष्कर्ष– समीक्षा दर्शाती है कि शिक्षक के मूल्य शिक्षण प्रभावशीलता के लिए गौण नहीं, बल्कि केंद्रीय हैं, विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में जहाँ शिक्षा को ऐतिहासिक रूप से एक समग्र और मूल्य–प्रधान उद्यम के रूप में माना जाता रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणाली शिक्षकों के लिए आधारभूत मूल्यों के रूप में सत्य, करुणा, सेवा और सम्मान पर जोर देते हुए दार्शनिक और व्यावहारिक ढाँचों का एक समृद्ध भंडार प्रदान करती है। आधुनिक अनुभवजन्य अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि ऐसे मूल्य छात्रों की प्रेरणा, जुड़ाव और विश्वास में सुधार करके शिक्षण प्रभावशीलता को बढ़ाते हैं। एनईपी 2020 जैसी नीतियाँ शिक्षा में मूल्यों को एकीकृत करने के महत्व को रेखांकित करती हैं, जो आईकेएस परंपराओं के साथ अच्छी तरह से संरेखित होती हैं।

आगे बढ़ते हुए, भविष्य के शोध को आईकेएस–आधारित मूल्यों को मापने योग्य संरचनाओं में परिचालित करना चाहिए और ग्रामीण सरकारी स्कूलों से लेकर शहरी निजी संस्थानों और उच्च शिक्षा तक, विविध संदर्भों में शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके प्रभाव का पता लगाना चाहिए। शिक्षक शिक्षा के लिए, आधुनिक शिक्षाशास्त्र और पारंपरिक भारतीय मूल्यों का सम्मिश्रण ऐसे शिक्षकों के निर्माण की दिशा में एक आशाजनक मार्ग प्रस्तुत करता है, जो न केवल शैक्षणिक शिक्षण में प्रभावी होंगे, बल्कि नैतिक, दयालु और सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण भी करेंगे।

संदर्भ सूची–

1- Altbach, P. G. (2005). *Education and neocolonialism*. In P. G. Altbach (Ed.), *Comparative education*. Greenwood Publishing.

2. बालासुब्रमण्यन, आर. (2019). भारतीय ज्ञान प्रणाली और शिक्षा. आईजीएनसीए प्रकाशन.

3- Batra, P. (2009). Reclaiming the space for teachers to address the UEE teaching–learning quality deficit. *Theme Paper for the Mid-term Review of EFA, published by NUEPA, September*.

4- Beijaard, D., Meijer, P. C., & Verloop, N. (2004). Reconsidering research on teachers' professional identity. *Teaching and teacher education*, *20*(2), 107-128.

5- Campbell, E. (2003). The ethical teacher. McGraw-Hill Education.

6- Darling-Hammond, L. (2017). Teacher education around the world: What can we learn from international practice? *European Journal of Teacher Education, 40*(3), 291–309.

7- Hofstede, G. (2001). *Culture's consequences: Comparing values, behaviors, institutions and organizations across nations* (2nd ed.). Sage.

8- Joshi, K. (2018). *The Vedic teacher: An exploration of Indian educational heritage*. Delhi: Motilal Banarsidass.

9- Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.

10- NCERT. (2005). *National Curriculum Framework 2005*. National Council of Educational Research and Training.

11- Pathak, R. (2021). Teacher effectiveness: An Indian perspective. *Journal of Education and Human Development, 10*(1), 32–42.

12- Radhakrishnan, S. (1998). *Indian philosophy* (Vol. 2). Oxford University Press.

13- Rani, S., & Kumar, V. (2020). Teacher values and teaching effectiveness in Indian higher education. *International Journal of Education and Development, 6*(2), 45–60.

14- Rashid, A., & Qaisar, S. (2017). Teacher values and their impact on teaching effectiveness. *Pakistan Journal of Education, 34*(1), 1–20.

15- Schwartz, S. H. (1992). Universals in the content and structure of values. *Advances in Experimental Social Psychology, 25*, 1–65.

16- Sharma, R. (2019). Value education and teacher preparation in India. *Educational Quest: An International Journal of Education and Applied Social Sciences, 10*(1), 21–27.

17- Soni, R. (2015). Buddhist education and its relevance today. *Indian Journal of Philosophy and Religion, 20*(2), 67–78.

18- Stronge, J. H. (2018). *Qualities of effective teachers* (3rd ed.). ASCD.